अस़्स़लातुल्ह़ुसैनीयतु

(दुरूदे ह़ुसैनी)

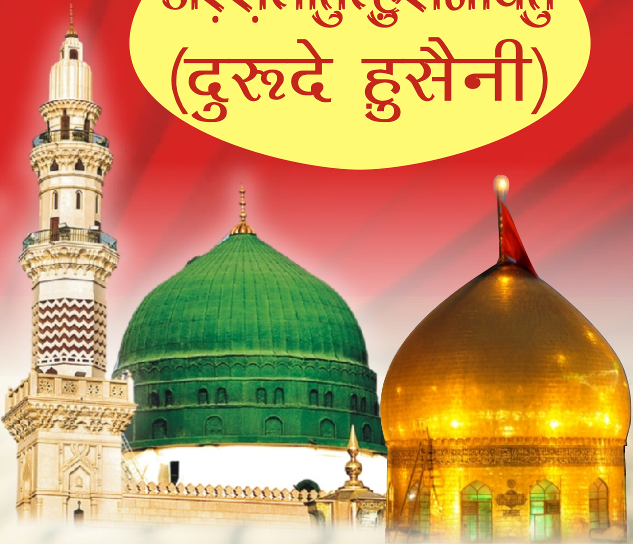

मुरत्तिब

मोह़म्मद अ़ज़ीज़ सुल्त़ान नाचीज़

786/92

अरसलातुल्हुसैनीयतु

(दुरूदे हुसैनी)

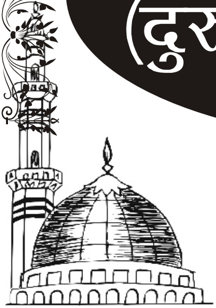

मुरत्तिब

बमौक़ा मोहर्रम 1439हि0

बफ़ैज़े रूहानी सय्यिदुना मोहयुद्दीन व सय्यिदुना मोईनुद्दीन व हज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ

मोहम्मद अज़ीज़ सुल्तान नाचीज़

राबेता न0: 9695435877

फ़ज़ीलते दुरूदे हुसैनी

अल्लाह तआ़ला का लातअ़दाद ह़म्दो शुक्र है कि आस्तानए आ़लिया ह़ज़रात मख़्दूमीन सादात चौदहों पीराँ रदि़यल्लाहु अ़न्हुम के अस्ले रूह़े रवाँ सय्यिदी मौलाई ह़ज़रत मख़्दूम सय्यिद अह़मद वलीयुल्लाह जीलानी बग़दादी ने इस दुरूदे हुसैनी को अपनी रूह़ानी व क़लबी फ़ैज़ान से अ़ता फ़रमाया ह़ज़रत मख़्दूम सय्यिद अह़मद वलीयुल्लाह जीलानी बग़दादी सय्यिदी मौलाई मोह़्युद्दीन शैख़ अ़ब्दुल क़ादिर जीलानी बग़दादी रदि़यल्लाहु अ़नहु के सा़हे़ब ज़ादे सय्यिदी मौलाई ह़ज़रत अबू सा़लेह़ जीलानी बग़दादी की नस्ले पाक से हैं यह दुरूदे हुसैनी अस्रारे इलाहिया के ख़ज़ानों में से एक अन्मोल ख़ज़ाना है, जिस के फ़ज़ाइल एह़ात़ए तह़रीर में नहीं आ सकते इस दुरूद को मोह़र्रमुल ह़राम की पहली तारीख़ से कस्रत से मअ़मूल में लाए इस दुरूद को पढ़ने वाले को "या अय्युहल्लज़ी न आमनुत्तकुल्ला ह व कूनू

मअ़स्सा़दिक़ीन" (ऐ ईमान वालो तुम अल्लाह से डरो और सच्चों के साथ हो जाओ) का कामिल फ़ैज़ मिलेगा और उसे "रब्बना आतिना फ़िद्दुन्या ह़ स नतवँ व फ़िल आख़िरति ह़ स नतवँ व क़िना अ़ज़ाबन्नारि" (ऐ हमारे पालनहार तू हमें दुन्या में भलाई दे और आख़िरत में भलाई दे और हमें आग के अ़ज़ाब से बचाले) की नेअ़मत ह़ासि़ल होगी और वह "अला इन्न औलिया अल्लाहि ला ख़ौफ़ुन अ़लैहिम वलाहुम यह़ज़नून" (ख़बरदार होशियार बे शक अल्लाह के दोस्तों को न कोई ख़ौफ़ है और न उन्हें कोई मलाल है) के गिरोहे औलिया से कामिल तौ़र पर मुस्तफ़ीज़ होगा, वह सा़लिह़ीन के सि़फ़ात से मुत्तसि़फ़ होगा, उसे नबी करीम ﷺ का दीदारे पाक नसी़ब होगा इस दुरूद को मअ़मूल में रखने वाले के लिए अल्लाह तआ़ला दो फ़िरिशते मुक़र्रर फ़रमाएगा जो उस की मदद फ़रमएंगे, उस की जुम्ला ह़ाजतें पूरी होंगी वह शैता़न मरदूद और उस के तमाम लश्करियों के शरों और हरबों से अम्न में रहेगा और वह हर

आफ़तो बला नीज़ नफ़्से अम्मारा के शरों से मामून होगा उसे अल्लाहो रसूल की खुश्नूदी और कुर्ब ह़ासिल होगा अगर क़ल्ब के अअ़दाद १३२ के मुताबिक़ वक़्ते मुक़र्ररा के साथ तीन दिन तक रोज़ाना १३२ बार इस दुरूद को पढ़े तो उस के क़ल्ब के वह दरवाज़े जो आ़लमे मल्कूत की त़रफ़ खुलते हैं वह खोल दिए जाएंगे, अगर रूह़ के अअ़दाद २१४ के मुताबिक़ तीन दिन तक रोज़ाना २१४ बार वक़्ते मुक़र्ररा के साथ पढ़े तो उस के लिए रूह़ानी फ़ैज़ान के दरवाज़े खोल दिए जाएंगे और उसे मक़बूल बंदगी की तौफ़ीक़ और इ़बादत में ज़ौक़ो शौक़ और लज़्ज़त ह़ासिल होगी अगर अ़क़्ल के अअ़दाद २०० के मुताबिक़ तीन दिन तक रोज़ाना २०० बार वक़्ते मुक़र्ररा पर पढ़े तो उसे अ़क़्ले सलीम ह़ासिल होगी और उस की अ़क़्ल अ़क़्ले कुल का फ़ैज़ पाकर अ़क़्ल की आफ़तों से महफ़ूज़ होजाएगी, औा अगर नफ़्स के अअ़दाद १६० के मुताबिक़ तीन दिन तक रोज़ाना १६० बार वक़्ते मुक़र्ररा पर पढ़े तो उस का नफ़्स नफ़्से

मुत्मइन्ना के मक़ाम पर पहुंच जाएगा और वह नफ़्स की जुम्ला खुबासतों से महफ़ूज़ होजाएगा बअ़दहू इसी त़रह़ इस मअ़मूल को क़ल्ब व रूह़ और अ़क़्ल व नफ़्स की नीयत से १२ बार रोज़ाना पढ़ले तो इस का फ़ैज़ बरक़रार रहेगा उस का हर नया साल गुज़श्ता साल से बेहतर होगा और वह दह्रो क़ब्रो ह़श्र में भी इस के फ़ैज़ान से माला माल होता रहेगा, उसे इ़ल्मुल यक़ीन ऐ़नुल यक़ीन और ह़क़्क़ुल यक़ीन का दरजा मिलेगा और वह मुस्तजाबुद्दअ़वात होगा खुलासा यह कि इस दुरूदे पाक की बेशुमार फ़ज़ीलतें हैं जो कस्रत से पढ़ने वाले के मुशाहदे में आजाएंगी।इन्शाअल्लाहु तअ़ाला।अल्लाह रब्बुल अ़ालमीन की बारगाह में दुअ़ा है कि हमें इस दुरूद को अदब के साथ पढ़ने की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमाए और जुम्ला मोमिन मर्दो अ़ौरत मुसल्मान मर्दो अ़ौरत ज़िन्दों और मुर्दों में से सब की मग़फ़िरत फ़रमाए अल्लाह खूब खूब इन सब पर अपनी रहतोकरम की बारिश फ़रमाए। आमीन।

अस़्सलातुल्हुसैनीयतु
(दुरूदे हुसैनी)

बिस्मिल्लाहिर्रह़मानिर्रह़ीम।

बिस्मिल्लाहि वस्सलामु अ़ला सय्यिदिना हु व मुह़म्मदुर्रसूलुल्लाहि या इला ह हुसैनिन या रब्ब हुसैनिन बिह़म्दिही व बिशुक्रिही व बिही नस्तई़नु।

अल्लाहुम्म इन्नी अस्अलु क बिनूरि कर्रह़मति अन्तुस़ल्लि य व तुसल्लि म दाइमन अ ब दन अ़ला सय्यिदिना नूरिकर रह़मतिल्लज़ी मा अर्सल्तहू इल्ला रह़मतल्लिल आ़लमी न व मौलाना मुह़म्मदिनिल्लज़ी क़ा ल

अलहुसैनु मिन्नी व अना मिनल हुसैनि व अ़ला वालिदैहि व अहलि बैतिही व आलिही व अज़्वाजिही व ज़ुर्रीयातिही व अस्ह़ाबिही व जमीइ़ शुहदाइ करबला अ व औलियाइही व कुल्लि उम्मतिही अज्मई़न स़लातन तअ़सि़मुना बिहा फ़ीहाज़ि़हिस सनतिल जदीदति मिनश शैत़ानि व ज़ुर्रीयतिही व औलियाइही व मिन कुल्लि शर्रि मातअ़लमु व तुई़नुना बिहा अ़ला हाज़ि़हिन्नफ़्सिल अम्मारति बिस्सूइ व तर्ज़ुक़ुना बिहलइश्तिग़ाल बिमा युक़र्रिबुना इलै क ।

तर्जमाः–अल्लाह के नाम से शुरूअ़ जो बड़ा मेहरबान निहायत रह़म वाला है अल्लाह के नाम से शुरूअ़ और खूब सलामती नाज़ि़लहो हमारे सरदार मोह़म्मद ﷺ पर जो अल्लाह के रसूल हैं ऐ सय्यिदुना हुसैन अ़लैहिस्सलाम के मअ़बूद ऐ सय्यिदुना हुसैन

अ़लैहिस्सलाम के पालन हार ।

अल्लाह ही के लिए ह़म्दो शुक्र है और हम उसी से मदद चाहते हैं ऐ हमारे अल्लाह बेशक मैं तुझ से तेरे नूरे रह़मत के वास्त़े से सुवाल करता हूँ कि तू खूब खू़ब दाइमी अब्दी दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा हमारे सरदार अपने उस नूरे रह़मत पर जिसे तूने सारे जहान के लिए रह़मत बनाकर भेजा और हमारे उस मौला मोह़म्मद ﷺ पर जिन्हों ने फ़रमाया हुसैन मुझ से हैं और मैं हुसैन से और खूब खू़ब दुरूदो सलाम नाज़िल फ़रमा आप ﷺ के वालेदैन पर आप ﷺ की अहले बैत व आलो औलाद और अज़्वाज पर आप ﷺ की जुर्रियत व अस़्ह़ाब और तमाम शुहदाए करबला वालों पर और औलिया पर और आप ﷺ की सारी उम्मत पर ऐसा दुरूदो सलाम कि जिसकी बरकत से तू हमें इस नए साल में शैत़ान उस की जुर्रियत और उस के तमाम साथियों के शरों से मह़फ़ूज़ फ़रमादे और उन तमाम शरों से बचाले जो तेरे इ़ल्म में हैं नीज़ नफ़्से अम्मारा के मुक़ाबला में तू हमारी मदद फ़रमा और तू हमें ऐसे अअ़माल की तौफ़ीक़ अ़त़ा फ़रमा जो हमें तेरी बारगाह में कु़र्बत अ़त़ा करे।

آستانہ حضرات مخدومین سادات چودھوں پیراں (علیہم الرحمۃ والرضوان) الہ آباد

www.syed14peer.com